

जितिया व्रत कथा

एक समय की बात है, नर्मदा नदी के पास कंचनवटी नाम का एक नगर था। नदी की पश्चिम दिशा में मरुभूमि थी, जिसे बालुहटा के नाम से जाना जाता था। वहां एक विशाल पेड़ था, उसी पेड़ पर एक चील रहा करती थी। पेड़ के नीचे एक खोह (कोटर) थी, जिसमें सियारिन रहा करती थी। चील और सियारिन में गहरी दोस्ती थी। एक बार उन दोनों ने कुछ महिलाओं को जितिया (जीवित्पुत्रिका) व्रत करते हुए देखा, जिसके बाद उन्हें भी यह व्रत करने की इच्छा हुई। दोनों ने यह व्रत करने का संकल्प लिया। लेकिन व्रत के दिन ही उस नगर के एक बड़े व्यापारी की मृत्यु हो गई और उसका दाह-संस्कार उसी स्थान पर किया गया, जहां चील और सियारिन रहती थीं।

रात में मौसम काफी खराब हो गया और एक बड़ा तूफान आ गया। दूसरी तरफ, सियारिन को बहुत तेज भूख लगने लगी और ऐसे में उसे व्यापारी का शव पड़ा हुआ मिल गया। उससे रहा नहीं गया और उसने व्यापारी का मांस खा लिया, जिसके कारण उसका व्रत टूट गया। लेकिन चील ने पूरे नियम और संयम के साथ यह व्रत रखा और अगले दिन पूरी श्रद्धा के साथ पारण किया।

मृत्यु के बाद अगले जन्म में दोनों ने एक ब्राह्मण के घर में दो बेटियों के रूप में जन्म लिया। चील बड़ी बहन बनी और उसका नाम शीलावती रखा गया, जबकि सियारिन छोटी बहन बनी और उसका नाम कपुरावती रखा गया। शीलावती, जो पिछले जन्म में चील थी, उसका विवाह बुद्धिसेन के साथ हुआ; वहीं कपुरावती का विवाह नगर के राजा मलयकेतु से हुआ। इस प्रकार कपुरावती नगर की रानी बन गई। भगवान जीमूतवाहन के आशीर्वाद से शीलावती के 7 पुत्र हुए, जबकि कपुरावती की जो भी संतानें हुईं, वे जन्म लेते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती थीं।

अपनी बहन शीलावती के जीवित पुत्रों को देखकर कपुरावती को ईर्ष्या होने लगी, जिसके चलते उसने राजा से कहकर शीलावती के सभी पुत्रों के सिर कटवा दिए। इसके बाद कपुरावती ने 7 थालियों में कटे हुए सिर रखकर और

उन्हें लाल कपड़े से ढककर शीलावती के घर भिजवा दिया। जब भगवान जीमूतवाहन ने शीलावती के पुत्रों के शव देखे, तो उन्होंने मिट्टी से सिरों का निर्माण करके और सभी को धड़ों से जोड़कर उनमें दोबारा प्राण फूंक दिए, जिससे शीलावती के सातों पुत्र पुनः जीवित हो गए। दूसरी तरफ, रानी कपुरावती द्वारा भेजी गई थालियों में जो सिर रखे थे, वे फल बन गए।

रानी कपुरावती बड़ी बेसब्री से अपनी बहन के सातों पुत्रों की मृत्यु के समाचार का इंतजार कर रही थी। लेकिन जब उसे उनकी मृत्यु की कोई खबर नहीं मिली, तो वह खुद अपनी बहन के घर पहुंच गई। वहां जाकर उसने देखा कि उसके सारे भांजे तो जीवित और स्वस्थ हैं। यह देखकर उसके होश उड़ गए और वह बेहोश हो गई। जब उसे होश आया, तो उसने अपनी बहन को सारी बात बता दी और कपुरावती को अपनी गलती का बहुत पछतावा हुआ। भगवान जीमूतवाहन की कृपा से शीलावती को अपने पिछले जन्म की सारी बातें याद आ गईं, जिसके बाद वह अपनी बहन को उसी जगह ले गई जहां वे दोनों पिछले जन्म में रहती थीं।

वहां पहुंचकर शीलावती ने कपुरावती को पूर्वजन्म की पूरी कथा बताई। यह सब सुनने और सत्य जानने के बाद कपुरावती की मृत्यु हो गई। जब राजा को अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिला, तो उन्होंने उसी पेड़ के नीचे उसका दाह-संस्कार कर दिया जहाँ वह पिछले जन्म में रहा करती थी। इस प्रकार कपुरावती को मोक्ष की प्राप्ति हुई।

जितिया व्रत की दूसरी कथा (चील और सियारिन की कथा)

किसी वन में एक चील और एक सियारिन रहती थीं। दोनों में गहरी दोस्ती थी। एक बार कुछ महिलाएं जंगल में आईं, जो जीवित्पुत्रिका व्रत के बारे में बात कर रही थीं। उनकी बातें सुनकर चील के मन में भी इस व्रत को करने की इच्छा हुई। चील ने अपनी मित्र सियारिन को भी इस व्रत के बारे में बताया, जिसके बाद दोनों ने विधि-विधान से जितिया का व्रत और पूजन किया। लेकिन पूजा के बाद ही चील और सियारिन को बहुत तेज भूख लगने लगी। चील ने तो भूख बर्दाश्त करने की कोशिश की, लेकिन सियारिन ऐसा नहीं कर पाई और वह जंगल में शिकार करने चली गई। जब चील ने सियारिन को मांस खाते देखा,

तो उसने उसे बहुत डाँटा। इस प्रकार सियारिन का व्रत टूट गया, लेकिन चील ने इस व्रत को पूरी निष्ठा से पूर्ण किया।

अगले जन्म में सियारिन और चील का जन्म बहनों के रूप में हुआ। सियारिन का विवाह एक राजकुमार से हुआ और चील का विवाह राज्य के मंत्री के पुत्र से हुआ। कुछ समय बीतने पर सियारिन ने एक पुत्र को जन्म दिया, लेकिन जन्म के कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद चील ने भी एक पुत्र को जन्म दिया और उसका पुत्र पूरी तरह स्वस्थ रहा। यह देखकर सियारिन को चील से ईर्ष्या होने लगी। जलन के कारण सियारिन ने अपनी बहन के पुत्र और पति को मरवाने की योजना बनाई, परंतु दोनों ही बच गए। एक दिन देवी मां सियारिन के सपने में आईं और उन्होंने उससे कहा - "यह तुम्हारे पूर्व जन्म के कर्मों का फल है, जिस कारण तुम्हारी कोई संतान जीवित नहीं रहती। यदि तुम अपनी स्थिति सुधारना चाहती हो, तो सच्चे मन से जितिया का व्रत रखो।"

सियारिन ने इस सपने के बारे में अपने पति को बताया और उनके कहने पर उसने अपनी बहन चील से क्षमा मांगी। सियारिन को अपनी गलतियों पर पछताता देखकर चील ने उसे माफ कर दिया। जब पुनः जितिया का व्रत आया, तो सियारिन और उसकी बहन चील दोनों ने एक साथ यह व्रत रखा। माता जितिया की कृपा से सियारिन को एक सुंदर व स्वस्थ पुत्र की प्राप्ति हुई। इसके बाद दोनों बहनें खुशी-खुशी रहने लगीं।